हे जगत्राता विश्वविधाता

रबीन्द्रनाथ टेगोर

हे जगत्राता विश्वविधाता
हे सुख शान्ति निकेतन हे

प्रेम के सिन्धु दीन के बन्धु
दुख दरिद्र विनाशन हे
नित्य अखन्ड अनन्त अनादि
पूरन ब्रह्म सनातन हे

जग आश्रय जग पति जग वन्दन
अनुपम अलख निरन्जन हे
प्राण सखा त्रिभुवन प्रति पालक
जीवन के अवलंबन हे